J.N.L. College

Khagaul, Patna-801105

(A Constituent Unit of Patliputra University, Patna)

E-mail : jnl_college@yahoo.com | Website : www.jnlcollegekhagaul.org

Principal Office

Ref.No. 457/GS/2024

Date 21/6/2024

Declaration

This is to certify that the data includes in this self-study Report (SSR) are true to the best of my knowledge. This SSR is prepared by the institution after discussion and no part thereof has been outsourced.

I/We am/are aware that the peer team will validate the information provided in this SSR during the peer team visit.

20.6.24

Prof. (Dr.) Nikhil Kumar Singh
IQAC Director
J.N.L. College, Khagaul,
Patna

IQAC Director
J.N.L. COLLEGE
KHAGAUL, PATNA 801105

20/6/24

20.06.2024

Prof. (Dr.) Madhu Prabha Singh
Principal
J.N.L. College, Khagaul,
Patna

Principal
J N.L. College
Khagaul, Patna

3.3.2 Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during last five year

S. N.	Name of the teacher	Title of the book/chapters published	Title of the paper	Title of the proceedings of the conference	Name of the conference	National / International	Calendar Year of publication	ISBN number of the proceeding	Affiliating Institute at the time of publication	Name of the publisher
1	Prof. (Dr.) Madhu Prabha Singh	Ram Kavya Ka Vaishvik Swaroop aur Jeewan Drishti					**2022**	**978--99-379540-0-6**	JayPrakash Mahila College, Chapra	Dr. Krishnachandra Mishra Publication Pvt Ltd, Nepal
2	Prof. (Dr.) Madhu Prabha Singh		Ramcharitmanas Me Vardit Ghatnaon Me Vaigyanikata	Vaishvik Paripreksh Me Ram Aur Ramayan Ka Swaroop			**2022**	**2705-4810**	JayPrakash Mahila College, Chapra	Hindi Kendriya Vibhag, Tribhuwan Vishwavidyalaya, Kirtipur, Nepal
3	Dr. Sarita Sinha		Uttar Chayawadi Kavitaon Me Rashtrabodh		Bharat Bodh in National Independence Struggle	National	**2023**		J.N.L. College, Khagaul	
4	Dr. Sarita Sinha		Sahitya: Ek Samajik Utpadan				**2022**	**2321-1504**	J.N.L. College, Khagaul	Naagfani
5	Dr. Avantika Kumari		Swasthya aur Paryavaran Sanrakshan main sanskrit				**2022**		J.N.L. College, Khagaul	Vedanjali
6	Dr. Avantika Kumari		Bhartiya Sanskriti ka vaishavya				**2022**	**0022-1945**	J.N.L. College, Khagaul	Journal of Interdisciplinary Cycle Research
7	Dr. Pallavi	Nanotechnology for Abiotic Stress Tolerance and Management in Crop Plants	Novel application of bio-based nanomaterials for the alleviation of abiotic stress in crop plants				**2024**	**978-0-443-18500-7**	J.N.L. College, Khagaul	Springer, Singapore. http://dx.doi.org/10.1016/B978-0-443-18500-7.00012-0
8	Dr. Pallavi	Sharma A. (eds) Microbes and Signaling Biomolecules Against Plant Stress. Rhizosphere Biology.	Role of Arbuscular Mycorrhizal Fungi in Amelioration of Drought Stress in Crop Plants				**2021**	**978-981-15-7094-0**	J.N.L. College, Khagaul	Springer, Singapore. https://doi.org/10.1007/978-981-15-7094-0_9
9	Dr. Pallavi	Pudake R.N., Sahu B.B., Kumari M., Sharma A.K. (eds) Omics Science for Rhizosphere Biology. Rhizosphere	Proteomics for Understanding the Interaction Between Plant and Rhizospheric Microflora				**2021**	**978-981-16-0889-6**	J.N.L. College, Khagaul	Springer, Singapore. https://doi.org/10.1007/978-981-16-0889-6_7.

10	Dr. Dilip Kumar	Dilip Kumar & Pankaj Kumar. Bahujan Rajniti Yatharth aur Bhavishya					**2023**	**978-81-95-9949-5-3**	J.N.L. College, Khagaul	Sahitya Sansad
11	Mr . Anup Kumar Jha	Reflection On Gender Issues : Forging Sustainable Future Tomorrow					**2023**	**978-81-88601-7-5**	J.N.L. College, Khagaul	Laxmi Publication
12	Dr. Avinash Kumar Jha	Itihas Ki Khoj Mein					**2018**	**09975-3672**	J.N.L. College, Khagaul	Center For Gender Study Patna
13	Dr. Medhavi Sudarshan	Viscaral Leishmaniasis : Asymtonatie Facts	Leishmaniasis : General Aspects At a Stigmatized Disease .				**2021**	**978-1-83968-082-3**	J.N.L. College, Khagaul	Intechopen
14	Dr. Girijesh Nandan Kumar	F. Scott Fitzgerald: Theme and Narrative Fictional Art					**2019**	**978-93-83591-24-4**	J.N.L. College, Khagaul	Prachya Prakashan

4

ISSN: 2705-4810

साहित्यलोक

भाषा, साहित्य, संस्कृति और साहित्यिक सिद्धान्त की अनुसंधानपरक शोध पत्रिका

वर्ष ४३ । अंक २ । सम्वत् २०७९ । ज्येष्ठ (सन् २०२२)

संगोष्ठी विशेषांक

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में राम और रामायण का स्वरूप

प्रधान सम्पादक
डॉ. संजीता वर्मा

सम्पादक
डॉ. सुमन रानी
संजय कुमार

सह सम्पादक
डॉ. श्वेता दीप्ति
प्रीति गुप्ता

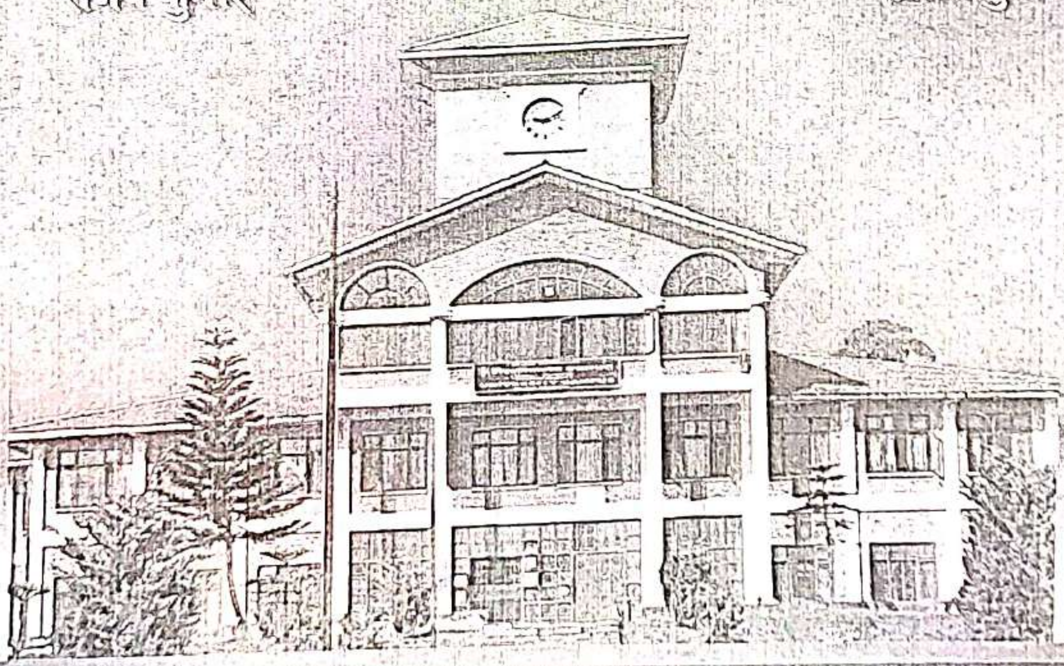

हिन्दी केन्द्रीय विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुर, नेपाल

य एवं
व्यक्ति
य एवं
मेहनत
भारत
भार।

वर्मा

अनुक्रम

	सम्पादकीय	5
1.	निराला : राम की शक्तिपूजा **प्रीति देवी**	11
2.	तुलसीदास और रामचरितमानस : उत्तरकाण्ड के विशेष संदर्भ में **अनूप कुमार पटेल**	16
3.	रामकाव्य परंपरा और साकेत **रूपम कुमारी**	20
4.	वाल्मीकि रामायण में सांगीतिक तत्व **गुरप्रीत कौर**	25
5.	रामचरित मानस में राम का स्वरूप **प्रिया सिंह**	31
6.	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्श चरित्र का अध्ययन **गीता देवी**	35
7.	वाल्मीकि और रामायण **डॉ सत्यनारायण एच.के.**	41
8.	छत्तीसगढ़ की संस्कृति में राम और रामचरितमानस के प्रभाव का अध्ययन **डॉ. अरविन्द कुमार जगदेव**	47
9.	मर्यादा पुरोषोत्तम राम का स्वरूप एवं रामचरितमानस **डॉ. बारेलाल जैन**	55
10.	विश्व में रामायण का स्वरूप **डॉ. रामटहल दास**	59
11.	रामचरित मानस एवं दलित विमर्श : एक विश्लेषणात्मक परिदृष्टि **डॉ. मधु प्रभा सिंह**	64
12.	रामचरितमानस में वर्णित घटनाओं में वैज्ञानिकता **डॉ. शिवदयाल पटेल**	69
13.	प्रेमचंद के कथा साहित्य में नारी विमर्श **राजेश कुमार चौहान**	78

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

[illegible]

स्वातन्त्र्योत्तर भारत में संस्कृत की विकास यात्रा

प्रमाण पत्र

क्रमांक सं. 132

प्रमाणित किया जाता है कि डॉ० अवन्तिका कुमारी असिस्टेन्ट प्रोफेसर जे.एन.एल. कालेज पटना बिहार ने सन्त गणिनाथ राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुहम्मदाबाद गोहना, मऊ एवं उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम् लखनऊ के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी में (ऑफलाइन/ऑनलाइन) प्रतिभाग किया और

स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण में संस्कृत

शोधकार्यालय/विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित विशिष्ट शोधपत्र प्रस्तुत किया।

अतः आयोजन मण्डल इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

आचार्य वाचस्पति मिश्र	पवन कुमार (IAS)	डॉ० [illegible]
डॉ० रामनाथ यादव	डॉ० राकेश कुमार	डॉ० चन्द्रकान्त दत्त शुक्ल

'आजादी का अमृत महोत्सव'

के उपलक्ष्य में

राष्ट्रीय संगोष्ठी

स्वाधीन भारत में सांस्कृतिक पुनरुत्थान के आयाम

14-15 मई 2022

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ....डॉ० अवन्तिका कुमारी, सहायक प्राचार्य........

जगत नारायण लाल कॉलेज, पटना........ ने 'आजादी का अमृत महोत्सव' के उपलक्ष्य में साहित्य संस्कृति फाउंडेशन, केंद्रीय हिंदी संस्थान (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) एवं ए. एन. कॉलेज, पटना द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में सक्रिय सहभागिता की तथा

........भारतीय संस्कृति का वैशिष्ट्य........

विषय पर आलेख प्रस्तुत किया।

हम इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

डॉ. विजय कुमार मिश्र	**प्रो. एस. पी. शाही**	**प्रो. बीना शर्मा**
अध्यक्ष, साहित्य संस्कृति फाउंडेशन	प्राचार्य, ए. एन. कॉलेज, पटना	निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान

Reflections on Gender Issues : Forging Sustainable Future Tomorrow

Editor

Dr. Avinash Kumar Jha
Associate Professor
University Department of History
Patliputra University, Patna

Co-Editor

Anup Kumar Jha
Assistant Professor & Head
Department of Economics, J.N.L. College, Khagaul
Patliputra University, Patna

Laxmi Publication
D/5, Near Durga Mandir, Indrapuri
Loni, Ghaziabad (U.P.)

ISSN No. 0975-3672

ITIHAS KI KHOJ MEIN

(इतिहास की खोज में)

A Research Journal of History

Vol.-XIII July-December, 2018 No.-1

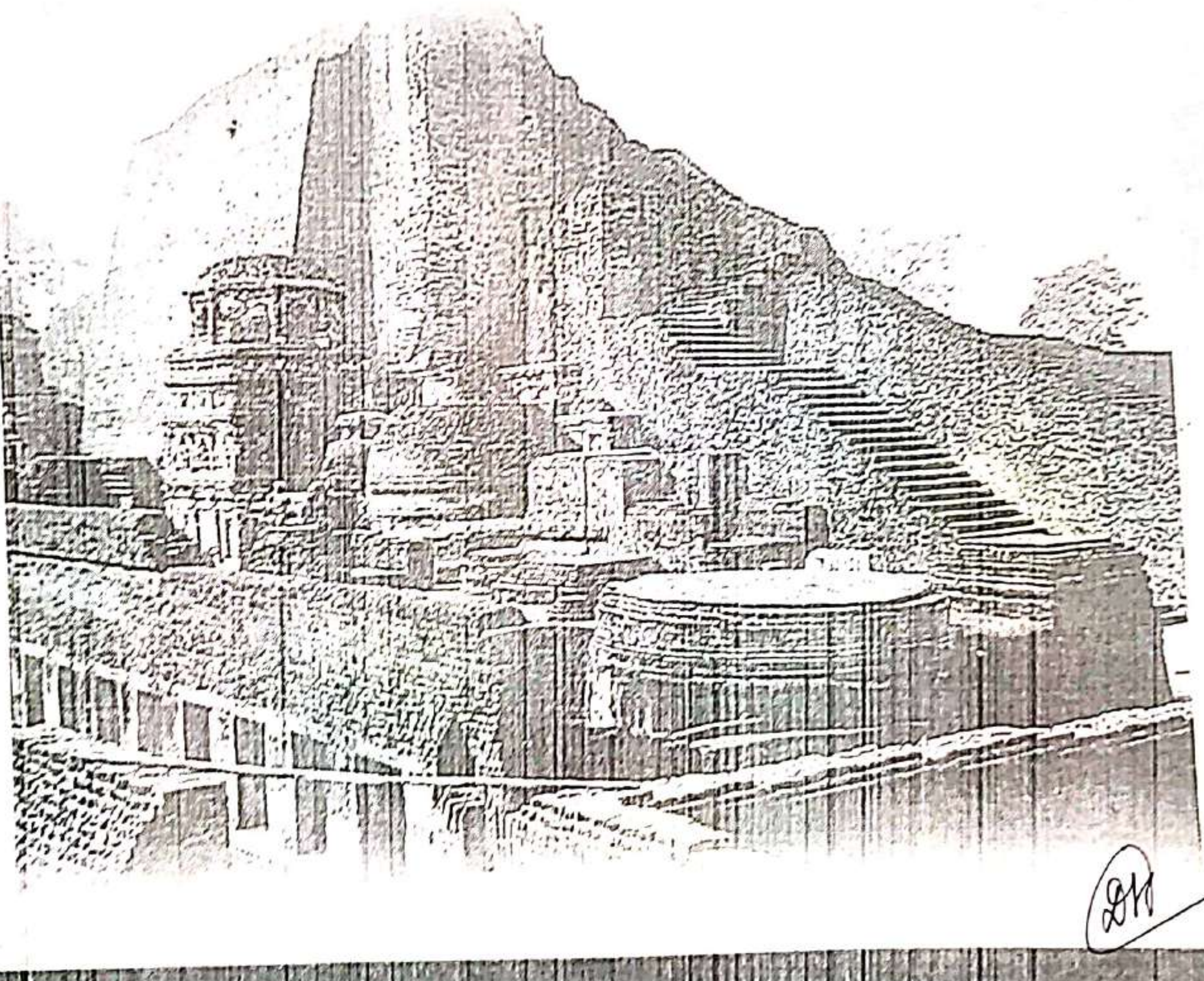

Edited by : Dr. Avinash Kr. Jha

CENTRE FOR GENDER STUDIES, PATNA

Estd. 2008-2009

ISBN-978-81-959949-5-3

सर्वाधिकार : संपादक

प्रकाशक : साहित्य संसद
आर.जेड. 35-बी, गली नं. 1 ए.
कैलाशपुरी एक्सटेंशन
नई दिल्ली-110045

प्रथम संस्करण : सन् 2023

मूल्य : 895.00 रुपये

अक्षर-संयोजक : प्रिंस कम्प्यूटर्स, ए-3, गली नं. 1, नेहरू विहार, करावल नगर रोड, दिल्ली-110094

मुद्रक : चेतन ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

Bahujan Rajniti : Yatharth Aur Bhavishy
Ed. by Dr. Dilip Kumar & Dr. Pankaj Kumar

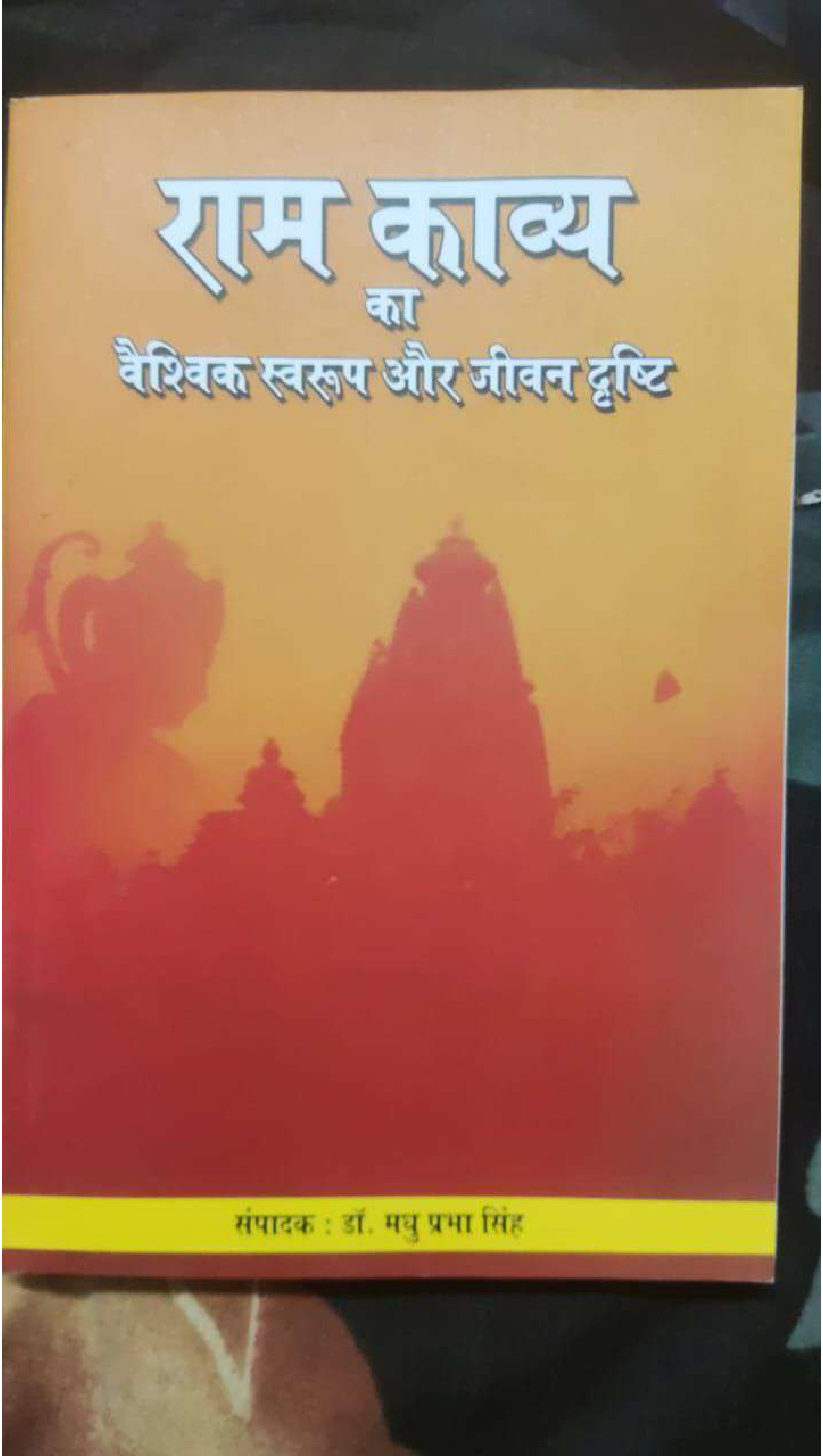
राम काव्य
का
वैश्विक स्वरूप और जीवन दृष्टि
संपादक : डॉ. मधु प्रभा सिंह

डॉ. मधु प्रभा सिंह

शिक्षा : एम.ए., पीएच.डी (हिन्दी), पी.जी. डिप्लोमा इन जर्नलिज्म

प्रकाशित पुस्तक : हिंदी पत्रकरिता की उपादेयता, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना

: निरालाकृत तुलसीदास में परम्परा एवं प्रयोग (प्रकाशनाधीन)

अन्य प्रकाशन : अनेकश: शोध आलेख उत्कृष्ट पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित

सम्मान : साहित्य सेवा सम्मान (बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना)

: साहित्य शिरोमणि सम्मान (साहित्यिक-सांस्कृतिक शोध संस्थान, भारत एवं हिन्दी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस)

सदस्यता : नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

: भारतीय हिन्दी परिषद्, इलाहाबाद

: हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग तथा विश्वविद्यालय के अधिषद्, अभिषद्, विद्वतपरिषद् तथा अन्य महत्वपूर्ण समितियों की सदस्य

सम्प्रति : प्राचार्य, जयप्रकाश महिला महाविद्यालय, छपरा

सम्पर्क : नागेश्वर कॉलोनी, कविरमन पथ, पटना-800001
e-mail : mpsinghprincipal@gmail.com

NRS. 500

ISBN : 978-99-379540-0-6

Dr. Krishnachandra Mishra Publication Pvt. Ltd.
Tyangla Fat, Ward No. 1, Kirtipur Municipality, Nepal
Email : info@himalini.com

उत्तर छायावादी कविताओं में राष्ट्र बोध

डॉ सरिता सिन्हा
सहायक प्राध्यापिका (हिंदी)
जगत नारायण लाल कॉलेज , खगौल (पटना)

21वीं सदी के तीसरे दशक के पूर्वार्ध में सम्पूर्ण भारतवर्ष आज़ादी के अमृत महोत्सव में सराबोर हो रहा है। ऐसे में यह अत्यंत लाज़मी है कि साहित्य जगत भी इस पावन महोत्सव में अपनी महती भूमिका तय करे। इन्हीं बातों को ध्यान में रख कर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी साहित्य की भूमिका पर विचार मंथन करते हुए उत्तर -छायावादी कवियों एवं उनकी रचनाओं पर ध्यान केंद्रित हुआ। फलस्वरूप इस संगोष्ठी हेतु मेरे शोध प्रपत्र का विषय है - "उत्तर छायावादी कविताओं में राष्ट्र बोध" ।

स्वतंत्रता आंदोलन के उत्तरोत्तर विकास के साथ हिंदी कविता और कवियों के राष्ट्रीय रिश्ते मजबूत हुए। राजनीतिक घटनाक्रम में कवियों के तेवर बदलते रहे और कविता की धार भी तेज होती गई। आंदोलन के प्रारम्भ से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक हिंदी काव्य संघर्षों से जूझता रहा। संघर्ष के इसी दौर में "मुक्ति की आकांक्षा " के स्वर हिंदी काव्य के रूप में 'छायावाद' में मुखरित हुए. और 'उत्तर छायावाद' में पुष्पित- पल्लवित होकर स्वतंत्रता आंदोलन को एक नए रूप में उभारा जिसे साहित्यिक कालखंड में उत्तर छायावाद के नाम से जाना गया।

उत्तर छायावादी कवि उत्सर्गधर्मी राष्ट्रीयता का सन्देश देते हैं और इसके लिए ओज़ और मस्ती के स्वर को लेकर उपस्थित होते हैं।अपनी मस्ती, उमंग एवं उल्लास में मदमस्त ये कवि युगीन परिवेश के प्रति जागरूक थे।प्रगतिशीलता का स्वर, विद्रोह-भावना, धार्मिक-सामाजिक रूढ़ियों का विरोध आदि के द्वारा वे देश के प्रति अपनी चिंता को व्यक्त कर रहे थे। इन कवियों ने तद्युगीन आशा-निराशा से भरी परिस्थितियों को देश और विश्व के व्यापक यथार्थ से जोड़कर उसे जनता तक पहुंचाया और साहित्य की सार्थकता को सिद्ध किया।

अपनी मातृभूमि को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त करना ही उनका परम कर्तव्य था जिसका निर्वाह वे अपनी रचनाओं और स्वाधीनता – संग्राम में सक्रिय भाग लेकर कर रहे थे। कवि अपने संकुचित 'स्व' के घेरे से निकल 'पर' का विश्व निहारने लगा। पराधीनता के प्रति आक्रोश से भरा कवि मन पुकार उठा-

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाये।
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर को जाये।
नाशों नाशों हो महानाशों की, प्रलयंकारी आँख खुल जाये।"

ये कवि देशवासियों को आगाह करते हुए कहते हैं --

"कब तक क्रुर प्रहार सहोगे?
कब तक अत्याचार सहोगे?
कब तक हाहाकार सहोगे?
उठो राष्ट्रके है अभिमानी
सावधान मेरे सैनानी।"

समय गतिमान व सतत परिवर्तनशील होता है। किन्तु जब अतीत के कवि और काव्य के कोई मूल्य वर्तमान को दिशा देने का कार्य करते हैं, तो अतीत के वे कवि और उनका चिंतन हमारे लिए महत्वपूर्ण हो जाते हैं। आज हम एक आज़ाद राष्ट्र में जी रहे हैं किंतु मानसिक पराधीनता से हमें पूर्णतः मुक्ति नहीं मिल पायी है। ऐसे में उत्तर- छायावादी कवियों की कवितायें न सिर्फ स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान बल्कि आज भी उतनी ही प्रासंगिक नज़र आती हैं। शोध -पत्र में इसकी चर्चा विस्तार से की जाएगी।

अर्जुन राम मेघवाल
Arjun Ram Meghwal

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

विधि एवं न्याय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
व
संसदीय कार्य और संस्कृति राज्य मंत्री
भारत सरकार, नई दिल्ली–110001
MINISTER OF STATE (I/C) FOR LAW & JUSTICE
AND
MINISTER OF STATE FOR
PARLIAMENTARY AFFAIRS AND CULTURE
GOVERNMENT OF INDIA, NEW DELHI-110001

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि संस्कार भारती, बिहार प्रदेश इकाई द्वारा एस. एन. सिन्हा महाविद्यालय, जहानाबाद में "स्वतंत्रता संग्राम में भारत बोध" विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की जा रही है जिसमें इस विषय से संबंधित परिचर्चा एवं शोध पत्रों का वाचन किया जाएगा।

देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है व इस कालखण्ड में यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की पंचप्राण की अवधारणा के अनुसार विरासत पर गर्व करने, गुलामी की हर सोच से मुक्ति, एकता व एकरूपता, नागरिकों द्वारा कर्तव्यों के पालन के द्वारा विकसित भारत बनाने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहा है। भारत की संस्कृति, त्योहारों एवं परंपराओं में भारतीयता का समागम व भारतीय मनीषियों का चिंतन बोध अनवरत बना रहा जो कि आज हमें अपने अतीत से बेहतर भविष्य के निर्माण की निरंतर प्रेरणा दे रहा है। राष्ट्र विकास की यात्रा में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश के असंख्य गुमनाम नायकों को सम्मान व इतिहास के पन्नों में यथा स्थान देने का कार्य आजादी के अमृत महोत्सव की श्रृंखला में तेजी से किया जा रहा है।

मुझे आशा है कि यह संगोष्ठी देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं शैक्षणिक संस्थानों के युवा शोधार्थियों एवं देश की भावी पीढ़ी को अपनी मातृभूमि एवं राष्ट्र की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक विरासत से परिचित कराने एवं उन्हें स्वाधीन राष्ट्र की चेतना से परिपूर्ण करने की दिशा में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगी। संगोष्ठी के सफल आयोजन हेतु मेरी अनंत शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

सादर!

आपका,

(अर्जुन राम मेघवाल)

श्री श्याम शर्मा (पद्मश्री)
अध्यक्ष, संस्कार भारती,
बिहार प्रदेश
ए–41, वृन्दावन अपार्टमेंट, मलाही पकड़ी,
कंकड़बाग, पटना– 80020

Room No. 402, 'A' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi-110 001 • Tel : 011-23387557, 23386974, 23386976 Fax : 011-23384241
Parliament : 56, Parliament House, New Delhi-110 001 • Tel : 23010895 Fax : 011-23011824
Delhi Residence : 5A, K. Kamraj Marg, New Delhi-110 001 • Tel : 011-23011770/71 Telefax : 011-23011772
Residence : Sansad Seva Kendra, C-66, Khaturia Colony, Bikaner, Rajasthan, Phone : 0151-2230260
E-mail : mljoffice@gov.in/arjunrammeghwal@gmail.com

संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार

संस्कार भारती
बिहार प्रदेश

INSTITUTE OF SOCIAL AND CULTURAL STUDIES, INDIA

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार एवं इन्स्टीच्यूट ऑफ सोशल एण्ड कल्चरल स्टडीज इंडिया के सहयोग से अंग्रेजी विभाग, एस. एन. सिन्हा कॉलेज, जहानाबाद (बिहार) एवं संस्कार भारती, बिहार प्रदेश के संयुक्त तत्वावधान में "स्वतंत्रता संग्राम में भारत बोध" विषयक दो दिवसीय (12-13 अगस्त 2023) राष्ट्रीय संगोष्ठी आधारित स्मारिका

मुख्य संरक्षक:

प्रो. (डॉ.) शशि प्रताप शाही कुलपति, मगध विश्वविद्यालय

संरक्षक:

पद्मश्री श्याम शर्मा, अध्यक्ष संस्कार भारती, बिहार प्रदेश
प्रो. (डॉ.) अरुण कुमार रजक, प्राचार्य

संपादक- डॉ. सुबोध कुमार झा IQAC समन्वयक एवं विभागाध्यक्ष अंग्रेजी

सह संपादक - विकास कुमार मिश्र, दक्षिण बिहार प्रांत, संस्कार भारती

संकलन

हरिओम कुमार, प्रदेश विस्तारक- संस्कार भारती, बिहार

आयोजन समिति सदस्य

1. प्रो. डॉ. उमाशंकर सिंह, विभागाध्यक्ष, हिन्दी 2. डॉ. अख्तर रोमानी, विभागाध्यक्ष इतिहास 3. डॉ. एन. पी. सिंह, विभागाध्यक्ष, गणित 4. श्री ओम प्रकाश वर्मा, विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र 5. डॉ. शशिधर गुप्ता, विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान 6. डॉ. बब्लू कुमार, विभागाध्यक्ष, कॉमर्स 7. मो. इतखाब आलम, विभागाध्यक्ष, राजनीति शास्त्र 8. डॉ. सिम्मी, विभागाध्यक्ष, उर्दू 9. डॉ. ज्योतिर्मय, सहायक प्राध्यापक, हिन्दी

व्यवस्थापन समिति

1. डॉ. कविन्द्र भगत, विभागाध्यक्ष, पाली, 2. डॉ. राजकुमार मिश्र, बॉटनी 3. प्रमिला कुमारी, मनोविज्ञान 4. कुमारी मानसी, हिन्दी 5. श्री शशिभूषण कुमार, प्रमुख सहायक 6. श्री रास नारायण भगत, लेखापाल 7. श्री राजीव नयन, स्टोर प्रभारी 8. श्री धर्मेंद्र कुमार, सामान्य शाखा 9. श्री शशिकांत कुमार निराला, लेखा शाखा 10. राजकुमार रजक, जन्तुविज्ञान।

तकनीकी एवं मिडिया समिति

श्री पंकज कुमार सिंह, श्री व्रजेश कुमार, नीलम कुमारी, श्री राजीव कुमार सिंह, श्री गौरव कुमार सिन्हा,

सहयोग कर्ता

संतोष कुमार, अमित कुणाल, मृत्युंजय कुमार, मनोरंजन कुमार, वेंकटेश पांडे, भागवत शर्मा, अक्षय कुमार शर्मा, विक्रांत कुमार, शोभित सुमन, स्मृति चंद्रा, रोशन सिंह, सत्य प्रकाश, मनु कौशिक

seminarbharatbodh@gmail.com

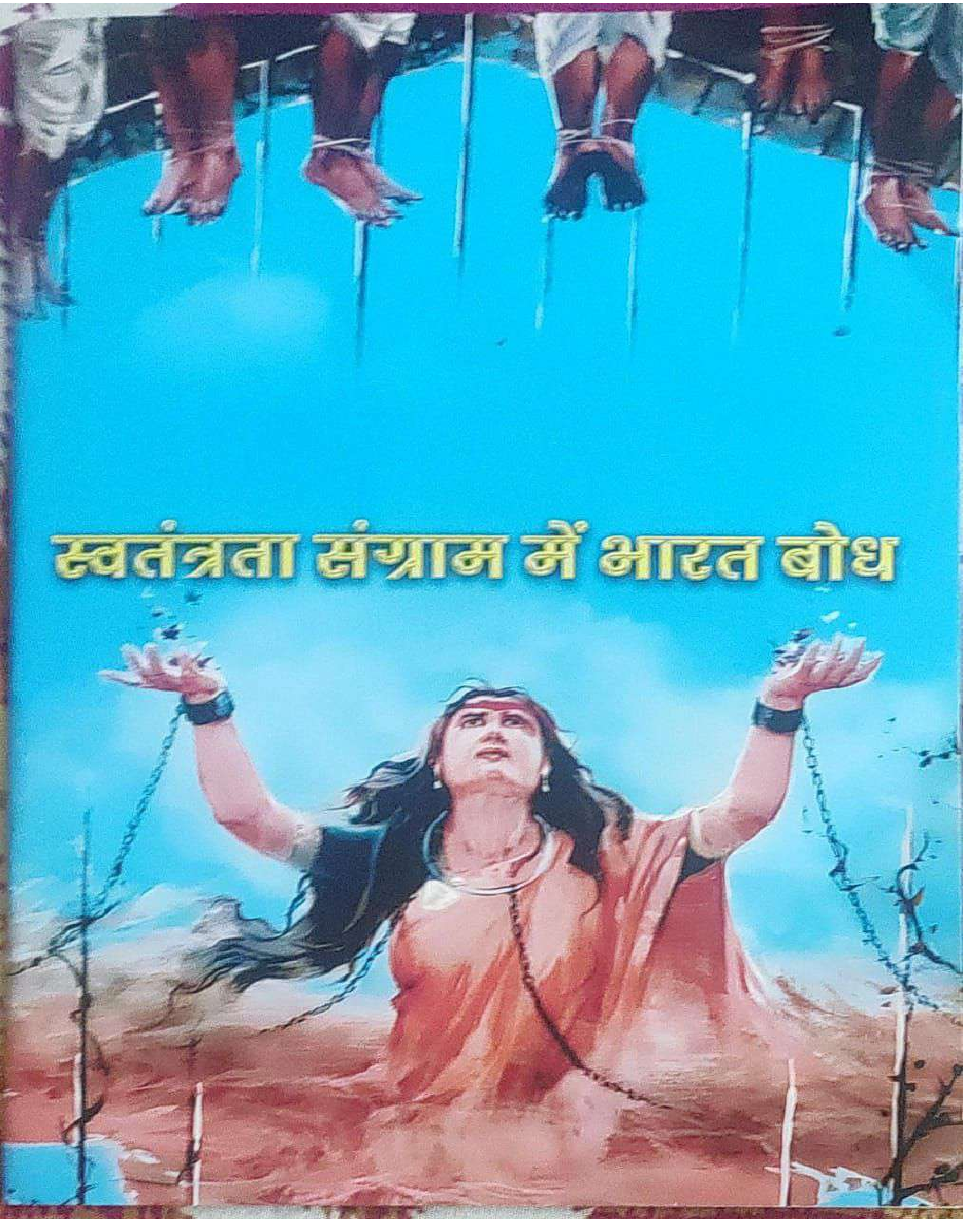
स्वतंत्रता संग्राम में भारत बोध

F. Scott Fitzgerald

Theme and Narrative Fictional Art

Dr. Girijesh Nandan Kumar

Prachya Prakashan

Publishers & Distributors
Ashok Raj Path, Chauhatta
Patna-800 004 (Bihar)
Mob. : 09708270290

ISBN: 978-93-83591-24-4

DESIGN BY : PRITSAN GRAPHICS, 09334111729

दिखाई दे रही हैं। तब इनको जचगियां होंगी। इन्हें छोटे-छोटे बच्चे पैदा होंगे। हमारे कुछ भी नहीं होगा"।[1] "इस तरह पूरी की पूरी कथा एक सघन आत्मीयता और भोलेपन के साथ पाठक के सामने घटती चली जाती है। सांगवीकर का आंतरिक और बाह्य दोनों ही पाठकों के सामने खुला हुआ रहता है। यूँ तो पूरी कथा 'फ्लैश बैक' में चलती है लेकिन पाठक को कहीं अहसास भी नहीं हो पाता कि वह पुरानी घट चुकी घटनाओं को सुन रहा है। चूँकि सांगवीकर आरम्भ से लेकर अन्त तक पाठक के साथ रहता है इसलिए कथा में एक निरन्तरता बनी रहती है और पाठक को यह आभास भी नहीं हो पाता कि सांगवीकर के आस पास की दुनिया कितनी तेजी से बदल रही है। कथा में सांगवीकर तथा उसके परिवार के कुछ- एक सदस्यों को छोड़कर कोई पात्र ऐसा नहीं है जो आरम्भ से लेकर अंत तक मौजूद हो। पूरे उपन्यास में पच्चासों पात्र है जो कथा के विकास के साथ-साथ अचानक बड़े सहज भाव से प्रकट हो जाते है और फिर अपनी भूमिका निभा कर लुप्त भी हो जाते हैं। कुछ पात्र तो ऐसे हैं जिनकी सृष्टि उपन्यास के अंतिम भाग में हुई है, ऐसे पात्रों में बाबा बंनास, बाबा झालानाथ के साथ- साथ जगन बाबा जैसे पात्र भी हैं जिनका जिक्र केवल दो पृष्ठों (285-86) पर हुआ है लेकिन ऐसे जैसे कि वे कथा में आरम्भ से मौजूद रहे हों। इन दो पृष्ठों में ही जगन बाबा सांगवीकर को अपने हिस्से का ज्ञान देकर गायब हो जाते हैं।

निष्कर्ष :-

संक्षेप में कहें तो बीस-पच्चीस वर्ष का सांगवीकर, जिन्दगी की कठिनाइयों से जूझता, नये नये अनुभवों को प्राप्त करता और अपनी पहचान की तलाश में लगा सांगवीकर हममें से कोई भी हो सकता है, बल्कि और ठीक-ठीक कहें तो वह 'सौ में से निन्यानवें' के भीतर मौजूद है। वह हमारा इतना परिचित है कि उसका कुछ भी अजीब नहीं लगता न तो व्यक्तित्व न ही कृतित्व और न ही उसकी भाषा। दरअसल इस उपन्यास और उसके नायक सांगवीकर में कुछ भी विशिष्ट नहीं है लेकिन चूँकि 'कोसला' के पहले के उपन्यासों की परम्परा विशिष्टता पर ही आधारित थी इसीलिए 'कोसला' की यह 'सामान्यता' उस विशिष्टों में भी विशिष्ट बना देती है और इसीलिए मराठी उपन्यास की परम्परा में 'कोसला' मील का पत्थर है।

******

सन्दर्भ: -

1 उपन्यास- वि. काशीनाथ राजवाड़, आलोचना, जनवरी- मार्च 88, पृ 26
2 कोसला- भालचंद्र नेमाड़, नेशनल बुक ट्रस्ट, हिन्दी अनुवाद, 1993, भूमिका, पृ 12
3 कोसला- भालचंद्र नेमाड़, नेशनल बुक ट्रस्ट, हिन्दी अनुवाद, 1993, पिछला फ्लैप
4 कोसला- भालचंद्र नेमाड़, नेशनल बुक ट्रस्ट, हिन्दी अनुवाद, 1993, पृ 298
5 कोसला- भालचंद्र नेमाड़, नेशनल बुक ट्रस्ट, हिन्दी अनुवाद, 1993, पृ 297
6 मराठी साहित्य - परिदृश्य - चंद्रकांत बांदीवडेकर, वाणी प्रकाशन-1997, पृ 366
7 कोसला- भालचंद्र नेमाड़, नेशनल बुक ट्रस्ट, हिन्दी अनुवाद, 1993, पृ -13
8 कोसला- भालचंद्र नेमाड़, नेशनल बुक ट्रस्ट, हिन्दी अनुवाद, 1993, पृ -12
9 कोसला- भालचंद्र नेमाड़, नेशनल बुक ट्रस्ट, हिन्दी अनुवाद, 1993, पृ -1
10 कोसला- भालचंद्र नेमाड़, नेशनल बुक ट्रस्ट, हिन्दी अनुवाद, 1993, पृ 4
11 कोसला- भालचंद्र नेमाड़, नेशनल बुक ट्रस्ट, हिन्दी अनुवाद, 1993, पृ 19
12 कोसला- भालचंद्र नेमाड़, नेशनल बुक ट्रस्ट, हिन्दी अनुवाद, 1993, पृ 39

साहित्य : एक सामाजिक उत्पादन

डॉ. सरिता सिन्हा
असिस्टेंट प्रोफेसर(हिंदी)
जगत नारायण लाल कॉलेज, खगौल
(पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय) ,पटना

साहित्य एक सामाजिक उत्पादन है क्योंकि यह अपने अंदर समाज की वस्तुस्थिति, यथार्थ और अपने से जुड़े व्यक्ति तथा वस्तु की झलकियां या यूं कहें की झांकियाँ प्रस्तुत करता है। यह बात अपने आप ही स्पष्ट हो जाती है जब हम साहित्य की परिभाषा को (जो शुरू से ही आलोचकों द्वारा दी जाती रही है) अपने ध्यान में लाते हैं। उन्नीसवीं सदी में समाजशास्त्रीय चिंतन साहित्य से समाज को दो स्तरों पर जोड़ता था - (i) एक शक्ति के रूप में समाज को साहित्य की उत्पत्ति मानते हुए उसके स्वरूप को निर्धारित करने में और (ii)साहित्य को समाज के दर्पण के रूप में। महावीर प्रसाद द्विवेदी के युग में साहित्य की दर्पणवादी दृष्टिकोण का बहुत प्रचलन था। उस युग के लेखकों ने बार-बार साहित्य को समाज का दर्पण कहा। साहित्य को समाज का दर्पण मानने वाला यह दृष्टिकोण रचनाकार की चेतना की क्रियाशीलता की उपेक्षा करता हैं । लेखक अपनी रचना में समाज को सिर्फ प्रतिबंबित ही नहीं करता बल्कि अपनी रचना में वह समाज को नए सिरे से रचता भी है। इस प्रक्रिया में उसकी कल्पनाएं और आकांक्षाएँ भी व्यक्त होती है। इसके साथ-साथ यह भी मानना होगा कि समाज उस साहित्य या रचना की अंतर्वस्तु में ही नहीं होता, उसके रूप और शिल्प में भी होता है। "दर्पणवादी दृष्टिकोण में न तो **शिल्प की विशेषताओं का विवेचन होता है और न ही विशेषताओं में अभिव्यक्त समाज की खोज होती है**"[1] इस मान्यता से हम इंकार नहीं कर सकते कि रचना के बेहतर समझदारी के लिए उसके सामाजिक संदर्भ की जानकारी जरूरी है। अधिकांश साहित्यिक समाजशास्त्री यह मानते हैं कि किसी रचना की अंतर्वस्तु में ही समाज नहीं होता बल्कि समाज तो रचना के हर स्तर में अर्थात भाषा, संरचना, शिल्प आदि में भी अभिव्यक्त होता है। जरूरत है रचना की उन विशेषताओं को पहचानने की जो उसकी संपूर्णता में समाज की खोज में मदद करे । इसके लिए बेन्थम ने 'अर्थ के मर्म' तथा गोल्डमैन ने 'विश्वदृष्टि' के विश्लेषण पर बल दिया। अडोर्नो के अनुसार 'अंतर्वस्तु के सत्य' का बोध आवश्यक है तो रेमंड विलियम्स के अनुसार 'अनुभूति की संरचनाओं' की पहचान। प्रो. मैनेजर पांडेय के अनुसार मार्क्सवादी साहित्य को सामाजिक चेतना का विशिष्ट रूप मानने वाले व्यक्ति विचारधारा के रूप में उसका (साहित्य का) विश्लेषण करते हुए साहित्य में समाज की खोज करते है।

आज के साहित्य शास्त्री रचना की अस्मिता को स्वीकार करते हुए समाज से उसके संबंध का विश्लेषण करते है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जब यह कहते हैं कि 'प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्ति का ही संचित प्रतिबिंब होता है , तो उनका अर्थ भी यही है कि साहित्य और समाज एक ही सिक्के के दो पहलू है। रचनाकार अपनी रचना में जनता की चित्तवृत्ति को स्थान देता है। सवाल यह कि क्या वह सामाजिक उपज नहीं है ? रचनाकार अपनी निर्जीव वैयक्तिक एवं सांस्कृतिक संवेदनाओ और अनुभूतियों को ही अपनी रचनाओं में व्यक्त करने हेतु प्रयासरत नहीं होता , बल्कि वह समाज के सन्दर्भ में निजी अनुभूति को अथवा अनुभूत सामाजिक यथार्थ को अपनी साहित्यिक कृति में प्रतिबिंबित करके उसकी पुन सृष्टि में सक्रिय होता है। प्रेमचंद ने गोदान में जिस समाज को अभिव्यक्ति दी है , वह उनकी अनुभूति से अलग नहीं लगता। अपनी वैयक्तिक अनुभूति को समस्त किसान वर्ग (समाज) की अनुभूति में ढालकर उन्होंने एक नए समाज की सृष्टि की है। इसमें अगर समाज का दु:खद यथार्थ है तो यथार्थ को परखने के बाद उसी के गर्भ में उन समस्याओं का निजात भी है। यही तो सृष्टि है जो रचनाकार की रचना में सक्रिय होता है। विश्वम्भर दयाल गुप्त के अनुसार साहित्य सर्जन स्वयं में एक सामाजिक प्रक्रिया है। अपनी प्रसिद्ध

पुस्तक 'उपन्यास का समाजशास्त्र ' में उन्होंने यह बताया है कि लेखक सर्जनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज को जानने का प्रयास करता है। वह साहित्य के समाजशास्त्र और विशेष रूप से उपन्यास के समाजशास्त्र के स्वरूप को निर्धारित करने में प्रवृत्त होता है। विश्वंभर दयाल गुप्त का यह कहना क्या इस बात की ओर संकेत नहीं करता है कि साहित्य अपने आप में एक सामाजिक उत्पादन है ?वह जिस समाज से उत्पन्न होता है, जिस समाज को अपने शब्दों द्वारा प्रतिबिंबित करता है- यह रचनाकार का यथार्थ ,उसका अनुभव होता है। **डॉ नगेंद्र के अनुसार "आत्मानुभूति ही वह मूल तत्व है जिसके कारण कोई व्यक्ति साहित्यकार और उसकी कृति साहित्य बन पाती है। "**[1]यह अनुभव साहित्यकार या रचनाकार कहां से ग्रहण करता है ? जाहिर है उसी समाज से , जिसमें वह रह रहा है। लेकिन साहित्य सिर्फ उस रचनाकार के कोरे अनुभव का ही प्रतिबिंब नहीं है बल्कि उसमें रचनाकार की कल्पना भी शामिल होती है जो उस समाज से (जिसमें रचनाकार जी रहा है)हटकर नए समाज का सृजन करती है ,उसे एक नया रूप देती है। कल्पना पूर्व अनुभूतियों की पुनर्योजना से अपूर्व की अनुभूति उत्पन्न करना साहित्यकार का एक सशक्त पक्ष है। **"कल्पना के अनेक अर्थों में एक अर्थ 'रूप देना ' भी होता है। कल्पना ही साहित्य को रूपायित करती है"**[3] जिस व्यक्ति में समाजशास्त्रीय कल्पना है, उसके मस्तिष्क में यह प्रश्न स्वाभाविक है कि समाज का स्वरूप कैसा हो? समकालीन समाज मानव इतिहास में कहां खड़ा होता है ? समाज में किस प्रकार के स्त्री- पुरुष रहते हैं ? रचनाकार या साहित्यकार इन प्रश्नों को रचना से ओझल नहीं कर सकता। वह इन प्रश्नों से टकराता हुआ अपनी रचना को अर्थ और स्वरूप प्रदान करता है। प्रेमचंद की रचनाओं में गांव उपेक्षित नहीं होता, चाहे वह शहरी कथा ही क्यों ना हो। ऐसा क्यों है? इसलिए कि उनकी विचारधारा अपने समाज को नजरअंदाज नहीं कर पाती। उनकी रचनाओं में जितनी बारीकियां (गांव और किसान जीवन के चित्रण में) है , वैसी कहीं और शायद ही देखने को मिले। लेखक जब भी समाज की बात करता है, तो वह सामाजिक समस्याओं को अपना प्रमुख मुद्दा बनाता है। प्रेमचंद ने गोदान के होरी द्वारा संपूर्ण समाज की किसान जीवन की व्यथा-गाथा कही है। इतना ही नहीं उस किसान की समस्या के द्वारा संपूर्ण समाज की समस्या का उद्घाटन किया है। समाज में किसान की स्थिति क्या है, नारी की स्थिति क्या है, अभिजात वर्गों या पूंजीपति वर्गों की समस्या क्या है, आदि-आदि। इन्हीं समस्याओं के उद्घाटन में लेखक या साहित्यकार की आकांक्षा और सामाजिक समस्याओं का समाधान भी छुपा होता है। साहित्य की परिभाषा के आधार पर भी उसे एक सामाजिक उत्पादन कहने से नहीं नकार सकते। भारतेंदयुगीन लेखक बालकृष्ण भट्ट ने साहित्य की आधुनिक परिभाषा देते हुए कहा कि "साहित्य जनसमूह के चित्र का चित्रपट है।" गार्सा द तासी के इतिहास में कहा गया है कि "इस वक्त हिंदी की बोली कुछ बढ़ गई है जो अलग-अलग समाज में बोली जाती है। आलोचना भी साहित्य का एक अंग ही है, क्योंकि वह किसी साहित्य में व्यक्त स्वीकारात्मक-नकारात्मक पहलू को उजागर करता है। आलोचक भी साहित्यकार (किसी विशेष टेक्स्ट के रचनाकार)की ही तरह उस रचनाकार के समाज, अपने समाज (जिसमें वह जी रहा है) तथा उस रचना में व्यक्त समाज को, उसमें छुपी समस्या को, उसके यथार्थ को, सामाजिक परंपरा को, इतिहास को, संस्कृति को ढूंढ कर बाहर निकालता है। यह सभी बिंदु हमारे समाज का ही एक हिस्सा है। पी. सी. जोशी के अनुसार 'आलोचना का गहरा संबंध समाज के विकास के प्रक्रिया से है।' भारतेंदुयुगीन साहित्य पहली बार अपनी रचना द्वारा व्यक्ति, समय और राष्ट्र की समस्या को लेकर सामने आया। भारतेंदु के नाटक, उनका यात्रा वृतांत इस बात का प्रमाण है। इसके बाद भी द्विवेदी युगीन साहित्य का पदार्पण हुआ। द्विवेदी जी के चिंतन के केंद्र में भाषा थी। भाषा के द्वारा ही रचना या साहित्यकार अपने समाज को उस रचना में ढाल पाने में सक्षम होता है। अतः भाषा ऐसी होनी चाहिए जो सभी लोगों की समझ में आ सके। जाहिर है उनकी चिंता भी एक सामाजिक चिंता ही थी जो उनकी रचनाओं में दिखी। द्विवेदी जी ने कवि के कुछ कर्तव्य बताएँ और उसी के अनुसार साहित्य के स्वरूप को भी बताने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि -

(i) कविता में साधारण लोगों की अवस्था, विचार एवं मनोविकारों का वर्णन होता है।

(ii) उसमें व्यक्ति के (रचनाकार के भी) धीरज, साहस, प्रेम, और दया का समावेश होता है (यानी गुणों का समावेश)।

(iii) भाषा सहज और स्वाभाविक हो, उसमें कल्पना की अतिशयता न हो और न ही गंभीर अलंकरण हो

इसी बीच प्रेमचंद भी अपनी रचनाओं के साथ आते हैं। उनकी कहानी - ' दो बैलों की कथा' में किसान जीवन है तो 'बेटों वाली विधवा' में एक पारिवारिक स्थिति के चित्र द्वारा सामाजिक स्थिति का जिक्र । 'कफन' कहानी के द्वारा शोषित प्रताड़ित मनुष्य की चिंतनशक्ति किस प्रकार क्षीण हो जाती है,वह किस प्रकार मनुष्य से जानवर बन जाता है- उसका चित्रण किया है। प्रेमचंद ने साहित्य को समाज का दर्पण नहीं वरन दीपक कहा। दीपक की ही तरह साहित्य समाज का मार्गदर्शन करती है। वह समाज को एक नई दिशा प्रदान करती है। इस प्रकार इतिहास, उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, यात्रा वृतांत, निबंध आदि किसी भी क्षेत्र में हमारा समाज या मनुष्य उपेक्षित नहीं है। यदि कोई राष्ट्रीय साहित्य लिखा जाता है तो वहाँ भी समाज और मनुष्य को अभिव्यक्ति मिलती है क्योंकि मनुष्य से समाज और समाज से ही राष्ट्र को अभिव्यक्ति मिलती है। मजदूर आंदोलन अगर किसी साहित्य में जोर-शोर से उभर कर आता है और राष्ट्रव्यापी आंदोलन बन जाता है तो वहाँ भी हमारे समाज की उपेक्षा नहीं होती क्योंकि मजदूर भी समाज का एक अंग होता है। रचनाकार उस मजदूर की समस्या को नजरअंदाज नहीं कर सकता क्योंकि उसी समस्या ने आंदोलन को जन्म दिया और इसी आंदोलन के तहत उनकी समस्या का समाधान भी है। आज जितनी भी कहानियां, उपन्यास या साहित्य रचे जा रहे हैं, उसमें मनाव एवं समाज के अंतर्द्वंद्व और उनकी विडम्बनाएँ खुलकर सामने आती है। महिला लेखन के आगे बढ़ने का क्या कारण है - सामाजिक स्वीकृति, एक स्वतंत्रता की मांग जो पहले के साहित्य में नहीं मिलती थी। दलित लेखक ,आदिवासी लेखक आदि भी इससे अप्रभावित नहीं।

अंत में यही कहा जा सकता है कि प्रत्येक समाज-शास्त्री साहित्य को एक सामाजिक तथ्य मानते हैं। यह सामाजिक तथ्यता रचना, रचनाकार और पाठक से तय होती है। प्रतयेक साहित्य की एक सामाजिक भूमिका होती है। साहित्य एक सामाजिक कर्म है। अगर वह कर्म है , तो उसका कोई न कोई कारण, कर्ता और कर्म होगा। क्या है यह? हम देखते हैं कि इसका कारण समाज है , कर्ता लेखक है और कर्म पाठक है। अतः **'सोशल प्रोडक्शन ऑफ़ आर्ट' में जैने उल्फ द्वारा कही गयी बात-"साहित्य एक समाजिक उत्पादन है"** मेरे ख्याल से बिलकुल ठीक हैं और तब, दूसरे स्तर पर उत्पादक होंगे लेखक या रचनाकार। तीसरे स्तर पर कृति, चौथे स्तर पर वितरण -(प्रकाशन से पुस्तकालय तक) और अंत में पाठक समुदाय।

******

सन्दर्भ सूची:-

(1) मैनेजर पांडेय - साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका, प्रकाशन वर्ष 1989, पृष्ठ संख्या -14

(2) डॉ. नगेंद्र - विचार और विवेचन, प्रकाशन वर्ष 1944, पृष्ठ संख्या - 5

(3) डॉ. बच्चन सिंह - आधुनिक हिंदी आलोचना के बीज शब्द , प्रकाशन वर्ष 1994

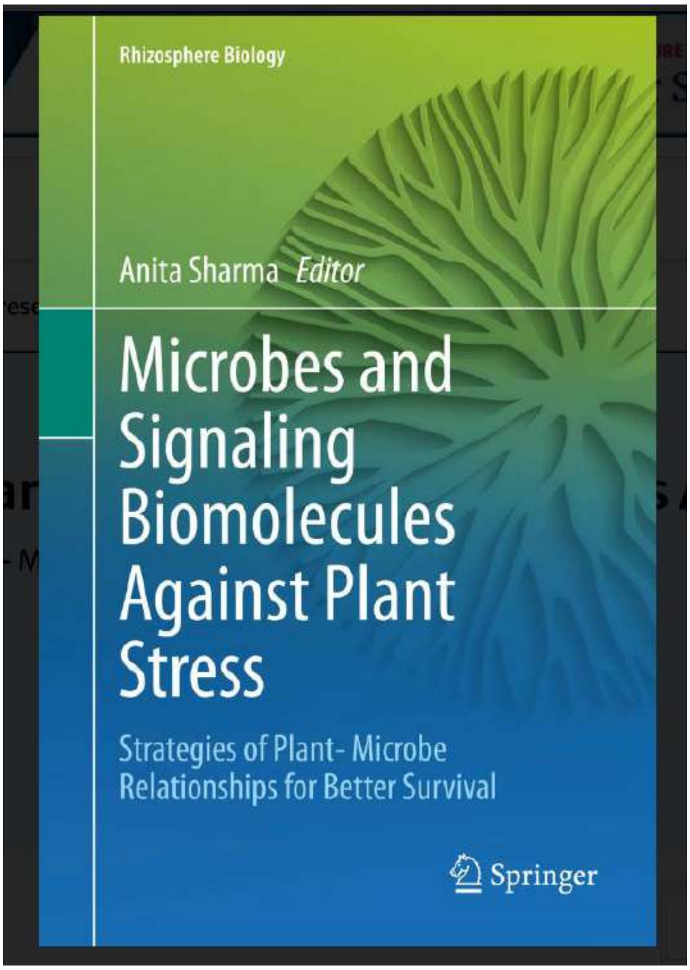

Bibliographic Information

Book Title
Microbes and Signaling Biomolecules Against Plant Stress

Book Subtitle
Strategies of Plant- Microbe Relationships for Better Survival

Editors
Anita Sharma

Series Title
Rhizosphere Biology

DOI
https://doi.org/10.1007/978-981-15-7094-0

Publisher
Springer Singapore

eBook Packages
Biomedical and Life Sciences, Biomedical and Life Sciences (R0)

Copyright Information
Springer Nature Singapore Pte Ltd. 2021

Hardcover ISBN
978-981-15-7093-3
Published: 07 November 2020

Softcover ISBN
978-981-15-7096-4
Published: 07 November 2021

eBook ISBN
978-981-15-7094-0
Published: 06 November 2020

Series ISSN
2523-8442

Series E-ISSN
2523-8450

Edition Number
1

Number of Pages
XVIII, 294

Number of Illustrations
2 b/w illustrations, 14 illustrations in colour

Topics
Microbial Ecology, Microbial Genetics and Genomics, Plant Pathology, Biomedical Engineering/Biotechnology, Oxidative Stress

Chapter 9
Role of Arbuscular Mycorrhizal Fungi in Amelioration of Drought Stress in Crop Plants

Pallavi and Anil Kumar Sharma

Abstract Present chapter addresses the importance of arbuscular mycorrhizal (AM) symbiosis in the mitigation of one of the most limiting environmental constraints in terms of global crop productivity loss, i.e. drought/water stress. Superior root morphology leading to enhanced water and nutrient uptake, better antioxidant machinery to fight the elevated reactive oxygen species (ROS), along with improved osmotic adjustment by accumulating high levels of compatible solutes like proline, glycine betaine, sugars, etc., are among the multifaceted factors which make AM association far more significant than any other symbiotic association in plants. So far little progress has been made on molecular level to understand the mechanisms of this miraculous organism which include the involvement of aquaporins, some binding protein genes (BiPs), MAPK pathway genes, and stress responsive genes like proline dehydrogenase, invertase, proline synthetase, etc. However, with the advancement of new age molecular techniques it seems possible that the unravelling of this mystery is not far away.

Abbreviations

AM	Arbuscular Mycorrhiza
ATP	Adenosine triphosphate
BiP	Binding proteins
CAT	Catalase
EEA	European Environment Agency
ERM	extraradical mycelium
GOGAT	Glutamine synthase
GS	Glutamine synthetase

Pallavi

Pallavi (✉)
Department of Botany, J.N.L. College, Patliputra University, Patna, Bihar, India

A. K. Sharma
Department of Biological Sciences, College of Basic Science and Humanities, G.B. Pant University of Agriculture and Technology, Pantnagar, Uttarakhand, India

© Springer Nature Singapore Pte Ltd. 2021
A. Sharma (ed.), *Microbes and Signaling Biomolecules Against Plant Stress*, Rhizosphere Biology, https://doi.org/10.1007/978-981-15-7094-0_9

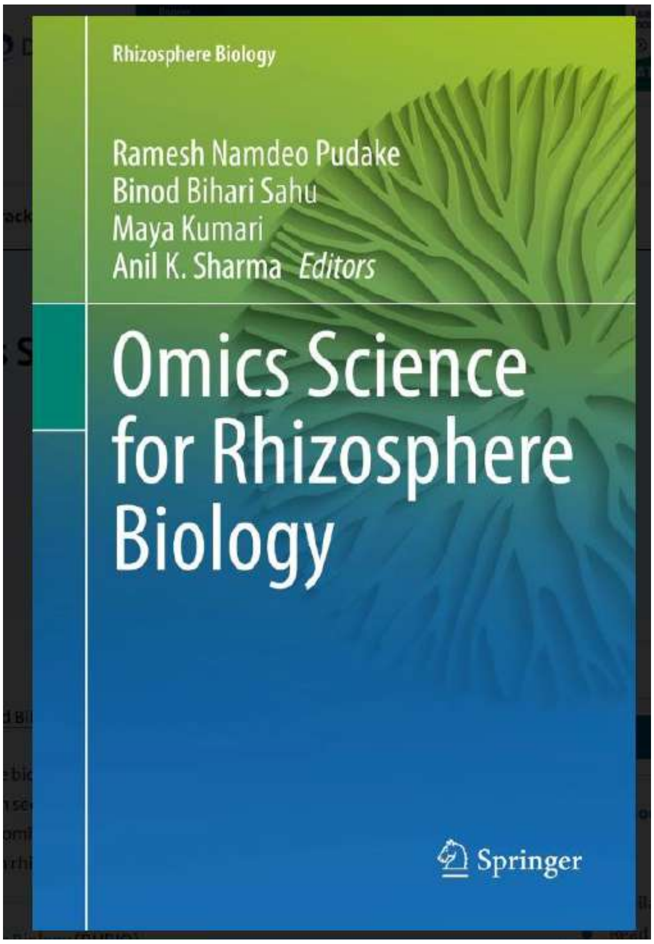

Bibliographic Information

Book Title
Omics Science for Rhizosphere Biology

Editors
Ramesh Namdeo Pudake, Binod Bihari Sahu, Maya Kumari, Anil K. Sharma

Series Title
Rhizosphere Biology

DOI
https://doi.org/10.1007/978-981-16-0889-6

Publisher
Springer Singapore

eBook Packages
Biomedical and Life Sciences, Biomedical and Life Sciences (R0)

Copyright Information
Springer Nature Singapore Pte Ltd. 2021

Hardcover ISBN
978-981-16-0888-9
Published: 09 May 2021

Softcover ISBN
978-981-16-0891-9
Published: 10 May 2022

eBook ISBN
978-981-16-0889-6
Published: 08 May 2021

Series ISSN
2523-8442

Series E-ISSN
2523-8450

Edition Number
1

Number of Pages
XIII, 279

Number of Illustrations
3 b/w illustrations, 21 illustrations in colour

Topics
Microbial Ecology, Bacteriology, Eukaryotic Microbiology, Plant Pathology, Systems Biology

Sections

Overview

About this book

Keywords

Table of contents (14 chapters)

Editors and Affiliations

About the editors

Bibliographic Information

Publish with us

Chapter 7
Proteomics for Understanding the Interaction Between Plant and Rhizospheric Microflora

Ramesh Namdeo Pudake, Pallavi, and Mrinalini Singh Pundir

Abstract Rhizosphere is a complex system of biological activities of plants and microflora. Interaction between plants and microbes residing in its rhizosphere has been point of interest among the scientific communities for a long time. In-depth knowledge of these interactions is crucial to the current world scenario in context of food availability. Metagenomics and metatranscriptomic studies are being done with the objective elucidate the diversity of culturable and nonculturable microbiome. But this information is incomplete without understanding their functional role in plant–microbiome interaction. Complete proteome represents the ongoing metabolic processes happening in soil at particular time and needs to be studied for knowing the key players in functionality of microbiome. Metaproteomics is emerging tool that sketch the information about entire proteins present in a specific environmental situation at a particular time. It correlates the diversity and functionality of soil microorganisms in both dominant species and at community level. With the help of traditional tools, the development of high-throughput proteomics tools like mass spectrometry, the better understanding of functional aspects of soil complex system has become feasible. However, the progress is little bit slow due to the presence of some bottle neck like presence of various interfering molecules present in the soil samples, scarcity of soil proteome databases, etc. This chapter discusses proteomics tools that are available and review recent studies where the proteomics tools have been applied to decode the underlying processes responsible for differential functioning of soil microbiome in diverse environments.

R. N. Pudake (✉)
Amity Institute of Nanotechnology, Amity University Uttar Pradesh, Noida, Uttar Pradesh, India
e-mail: rnpudake@amity.edu

Pallavi
J.N.L. College Khagaul, Patliputra University, Patna, Bihar, India

M. S. Pundir
Department of Biological Sciences, College of Basic Science and Humanities, G.B. Pant University of Agriculture and Technology, Pantnagar, U.S Nagar, UK, India

© Springer Nature Singapore Pte Ltd. 2021
R. N. Pudake et al. (eds.), *Omics Science for Rhizosphere Biology*, Rhizosphere Biology, https://doi.org/10.1007/978-981-16-0889-6_7

OPEN ACCESS PEER-REVIEWED EDITED VOLUME

Leishmaniasis - General Aspects of a Stigmatized Disease

View Chapters | Share | Cite

ACADEMIC EDITOR

Leonardo de Azevedo Calderon
Oswaldo Cruz Foundation,
Brazil

BOOK METRICS OVERVIEW
5,075 Chapter Downloads
View Full Metrics →

Leishmaniasis is a major global health challenge, affecting approximately 12 million of the poorest people in 100 countries. It is a deforming and fatal disease in the visceral form. Therapies for leishmaniasis are numerically restricted, basically consisting of the administration of miltefosine, pentavalent antimonials, amphotericin B, or pentamidine. This is an important vulnerability against th...

READ MORE

Order Print Copy | Recommend to Your Library

PUBLISHED
13 April 2022

DOI
10.5772/intechopen.95200

ISBN
978-1-83968-082-3

PRINT ISBN
978-1-83968-081-6

EBOOK (PDF) ISBN
978-1-83968-092-2

COPYRIGHT YEAR
2022

NUMBER OF PAGES
256

OPEN ACCESS PEER-REVIEWED CHAPTER

Visceral Leishmaniasis: Asymptomatic Facts

WRITTEN BY

Medhavi Sudarshan and Sumit Sharan

Submitted: 17 September 2021 , Reviewed: 07 October 2021 , Published: 03 November 2021

DOI: 10.5772/intechopen.101109

CHAPTER METRICS OVERVIEW
366 Chapter Downloads
View Full Metrics

FROM THE EDITED VOLUME

Leishmaniasis - General Aspects of a Stigmatized Disease

Edited by Leonardo de Azevedo Calderonon

Book Details | Order Print

REGISTER TO DOWNLOAD FOR FREE

Share | Cite

Reflections on Gender Issues : Forging Sustainable Future Tomorrow

Editor

Dr. Avinash Kumar Jha

Associate Professor

University Department of History

Patliputra University, Patna

Co-Editor

Anup Kumar Jha

Assistant Professor & Head

Department of Economics, J.N.L. College, Khagaul

Patliputra University, Patna

Laxmi Publication

D/5, Near Durga Mandir, Indrapuri

Loni, Ghaziabad (U.P.)

Published by :

LAXMI PUBLICATION

D/5, Near Durga Mandir, Indrapuri

Loni Ghaziabad (U.P.)

ISBN 978-81-88601-7-5

© Dr. Avinash Kumar Jha

Price : Rs. 950/-

Publication : 2022

Printed by : Sonali Offset, Sahadra, Delhi-110032